जोगिन्द्र सिंह कंवल के 'सवेरा' में अभिव्यक्त प्रवासी संवेदनाएं

श्रीमती सुभाषिनी लता कुमार
हिन्दी प्रवक्ता
फिजी नेशनल यूनिवर्सिटी , फिजी
subashnilata1977@gmail.com
Ph no. 9148105999

सुभाषिनी लता कुमार,जोगिन्द्र सिंह कंवल के 'सवेरा' में अभिव्यक्त प्रवासी संवेदनाएं, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 1/सितंबर 2021,(27-37)

सारांश :

फीजी भी एक ऐसा देश है जहाँ कई प्रवासी भारतीयों ने अपनी जवानी को आग की भट्टी में डाल कर, खून-पसीना बहाकर इस देश को प्रशांत महासागर का सुन्दर द्वीप बनाया है। 'सवेरा' जोगिन्द्र सिंह कंवल जी का ऐतिहासिक उपन्यास है जिसके माध्यम से उन्होंने फीजी में प्रवासी भारतीयों के आगमन का यथार्थ चित्र अंकित किया है। उपन्यास का मुख्य पात्र, अमर सिंह गिरमिट प्रथा के अंतर्गत फीजी आए भारतवंशियों का प्रतिनिधित्व करता है। गिरमिट प्रथा के अंतर्गत फीजी आए इन गिरमिटियों को मानसिक एवं शारीरिक शोषण, आरकाटियों के छल, विस्थापन, अमानवीय सलूक, स्त्री शोषण आदि समस्याओं से गुजरना पड़ा। 'सवेरा' में कंवल जी ने इतिहास का यह लोमहर्षक कालखंड बड़ी ही संवेदना के साथ दर्ज किया है। कंवल का यह उपन्यास भारतवंशियों तथा उनके पूर्वजों के संघर्ष तथा त्रासदी एवं शोषण को संपूर्ण परिवेश के साथ उद्घाटित करता है।

मूल शब्द : फीजी, प्रवासी, भारतवंशी, आरकाटी, विस्थापन, गिरमिटिया

जोगिन्द्र सिंह कंवल के 'सवेरा' में अभिव्यक्त प्रवासी संवेदनाएं

'सवेरा' फीजी के सुप्रसिद्ध लेखक जोगिन्द्र सिंह कंवल का प्रथम उपन्यास है। सन् 1976 में इसका प्रथम प्रकाशन सिंह पब्लिशज़, फीजी द्वारा हुआ। यह उपन्यास हिंदी संस्थान, उत्तर प्रदेश भारत द्वारा पुरस्कृत हो चुका है और इसका अंग्रेजी अनुवाद डॉ. शलैन्द्र सिन्हा द्वारा 'द मॉरनिंग' नाम से प्रकाशित किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास कंवल ने "कुली प्रथा में आए अपने उन साठ हजार बुज़ुर्गों के

नाम समर्पित किया है जिनके पसीने की महक अभी तक फीजी की धरती से आती है।[1]" 'सवेरा' कंवल जी का ऐतिहासिक उपन्यास है जिसके माध्यम से उन्होंने फीजी में प्रवासी भारतीयों के आगमन का भव्य चित्र अंकित किया है।

साहित्यकार जोगिन्द्र सिंह कंवल

श्री जोगिन्द्र सिंह कंवल (1927-2017) फीजी के सर्वाधिक लब्धप्रतिष्ठ लेखक माने जाते हैं। वे वर्ष 1958 में पंजाब, भारत से फीजी आए थे। उन्हें फीजी का प्रेम चंद भी कहा जाता है। उन्होंने सदैव अपनी रचनाओं में फीजी के जन-जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। 'फीजी में हिंदी के सौ वर्ष', 'फीजी का हिंदी काव्य साहित्य', 'मेरा देश मेरे लोग', तीन काव्य संग्रह, चार उपन्यास, आलोचनात्मक लेख आदि हिंदी भाषा एवं प्रवासी साहित्य के लिए बहुमूल्य हैं। उनके उपन्यास 'सवेरा', 'धरती मेरी माता', 'करवट' : ये तीनों ही कृतियाँ गिरमिटियों के जीवन का कलात्मक दस्तावेज़ हैं।

'सवेरा' की भूमिका

फीजी भी एक ऐसा देश है जहाँ कई प्रवासी भारतीयों ने अपनी जवानी को आग की भट्टी में डाल कर, खून-पसीना बहा कर इस देश को प्रशांत महासागर का सुन्दर द्वीप बनाया है। गुलाम प्रथा के कानूनी रूप से खात्मे के बाद ब्रिटिश उपनिवेश को मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना, जमैका, फीजी आदि देशों में खेती के लिए मजदूरों की कमी महसूस हुई। तब भारत से करीब 12 लाख मजदूरों को एक अनुबंध के तहत इन उपनिवेशक देशों में भेजा गया। भारत में जगह-जगह पर लेबर डिपो बने और मजदूरों की भर्ती की जाने लगी। गरीबी से बदहाल और जमींदारों से त्रस्त लोग घर-बार, रिश्ते-नाते छोड़ बेहतरी का सपना लिए पानी के जहाज़ में सात समुद्र पार इन देशों में भेजे गए। इन मजदूरों को पाँच साल के अग्रीमेंट पर विदेश काम करने के लिए भेजा गया। फीजा के सर आथर गॉर्डन ने भारत को श्रम का एक सस्ता और विश्वसनीय स्रोत जानकर, 15 मई 1879 को लियोनिदास नामक जहाज में 463 मजदूरों का पहला जत्था फीजी मंगवाया (गिलियन, 1962: 212)।[i] ऐतिहासिक दृष्टि से फीजी में भारतीयों का आगमन भारत के बिहार, उत्तर प्रदेश, और दक्षिण प्रदेशों से पहुँचे गिरमिटिया श्रमिकों द्वारा हुआ। गिरमिटिया मजदूरों के अनुबंध के अनुसार उन्हें एक निर्दिष्ट समय के लिए निश्चित अवधि तक फीजी में काम करना था।

'सवेरा' उपन्यास का केंद्र इन्हीं गिरमिटियाँ भारतीयों से है, जो 19 वीं शताब्दी में एक खास अनुबंध के तहत फीजी भेजे गए थे। इन हजारों भारतीयों को ब्रिटिश सरकार के अफसरों ने झूठे सपने दिखाकर दूर उपनिवेशक देश फीजी में ले जा कर गुलामों की तरह काम करवाया। 'सवेरा' उपन्यास की भूमिका में कंवल जी ने लिखा है- "यह पुस्तक उन दिनों की चन्द घटनाओं पर आधारित है, जिन्हें मैं कुछ समय से इक्ट्ठा कर रहा था। इन्हीं घटनाओं की कड़ियों को लेकर सूत्र में जोड़ने का मैंने प्रयत्न किया है। इनमें बहुत सी बातें सच्ची हैं। मैंने केवल उन्हें शब्दों के वस्त्र पहनाए हैं।"[ii] 'फीजी के सृजनात्मक हिंदी साहित्य' में डॉ. विमलेश कांति वर्मा 'सवेरा' को गिरमिटि जीवन का साहित्यिक दस्तावेज़ कहते हैं। उनका यह मत है कि इस उपन्यास में "कंवल ने गिरमिटियों की यंत्रणा, उनके संघर्ष, उनकी आशा-निराशा को विविध मौखिक अनुभवों के सहारे कथा-सूत्र में पिरोकर पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।"[iii] अतः यह उपन्यास कुली के रूप में फीजी भेजे गए प्रवासी भारतीयों का ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।

कथावस्तु

'सवेरा' उन प्रवासी भारतीयों की कथा है जो गिरमिटिया मजदूरों के रूप में फीजी आए थे। इसकी कथा सन् 1880 के आस-पास आगरा, भारत के निकटवर्ती गाँव राजपुर से शुरू होती है जहाँ मुख्य पात्र अमर सिंह उर्फ अमरु जन्मा था। पिता की मृत्यु के बाद, अमर सिंह को स्कूल छोड़ सेठ करोड़ीमल के यहाँ मजदूरी करनी पड़ी। अमरु और शांति एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं लेकिन गरीबी एक दीवार बन कर उन दोनों के बीच में आ जाती है। एक दिन अमरु सेठ करोड़ीमल के अत्याचारों और गरीबी से तंग आकर सेठ करोड़ीमल को दण्डित करके वहाँ से भाग खड़ा होता है।

उन दिनों बिहारी नामक आरकाटी[2] गिरमिटियों को भर्ती कर रहा था। बिहारी की सहायता से अमरु फीजी जाने के लिए तैयार हो गया। अंग्रेज़ अफसर गरीब भारतीयों को धन के वैभव के झूठे सपने दिखाकर दूर देशों में ले जाते थे। वहाँ उनको दासों की तरह बेचा जाता था। बिहारी जैसे आरकाटी मजदूरों से चिकनी चुपड़ी बातें करके, इन सीधे-साधे गरीब देहातियों को फीजी का झूठा सपना दिखाकर जहाज पर चढ़ाने में सफल हो जाते थे। 'गेंजज' नामक जहाज से अमरु, रामसिंह, रहीम, कर्मचन्द, घनश्याम और न जाने कितने लोग अपने भविष्य के सुनहरे सपने लेकर फीजी पहुँचे।

जहाजी यात्रा के दौरान खानपान और छुआछूत की समस्या उत्पन्न हुई। इसके अलावा जहाज पर भोजन का अच्छा प्रबंध न होने के कारण घनश्याम जैसे यात्री रास्ते में ही मर गए। इन मजदूरों में कुछ औरतें भी थी जो या तो मेले में भटक गई थी, या कामी पुरुषों की यातना न सह पाने वाली विधवाएँ थी या भविष्य के झूठे सपनों में बहकाई गई गरीब और लाचार स्त्रियाँ थी। इन स्त्रियों में जमना भी थी जो

[2] आरकाटी- मजदूरों को भरती करने वाला अंग्रेज सरकार का एजेंट

उज्जवल भविष्य के सपने लिए फीजी आई थी। फीजी पहुँचने पर इन मजदूरों के सपने टूट गए जब उन्हें कई तरह के कष्टों का सामना करना पड़ा। अगर कोई गिरमिटिया बीच में लौटना चाहता तो वह अनुबंध में बंधने के कारण भारत नहीं लौट सकता था। एग्रीमेंट की अवधि समाप्त होने पर भी कई गिरमिटिया अपने खर्चे पर भारत नहीं लौट सकें। उन पर अनेक प्रकार के अत्याचार होते रहे, लेकिन हर मजदूर के दिल में यही आशा थी कि सवेरा आएगा और उनके जीवन में खुशी की किरण चमकेगी।

कोलम्बर पीटर ने नायक अमरु को जान से मारने का षड़यंत्र रचा लेकिन जमुना की मदद से अमरु की जान बच गई। वहीं सिक्ख राम सिंह मजदूरों की मदद करने के लिए पुलिस में भर्ती हो जाता है। अफसरों द्वारा स्त्रियों का शोषण भी किया जाता था। एक दिन अफसर पीटर ने जमुना का बलात्कार करना चाहा, लेकिन जमुना अपनी रक्षा करने में सक्षम हुई। वह समय-समय पर स्त्रियों को सताया करता था। फिर एक दिन सभी स्त्रियों ने मिलकर पीटर से बदला लेने की ठानी। स्त्रियों ने पीटर को जूते और जो कुछ सामने आया उससे खूब पिटाई की। फिर आठ-दस स्त्रियों ने पीटर को उठाकर खेत की मोढ़ी में गिरा दिया और सभी ने बारी-बारी पीटर के मुँह पर पेशाब भी किया। इस घटना के बाद, पीटर शर्मिंदा होकर चुपचाप ऑस्ट्रेलिया भाग गया।

वस्तुतः एग्रीमेंट की शर्ते कठिन थी और उस पर कोलम्बर और सरदार बेबस मजदूरों से कई गुना ज्यादा काम लेते थे। जब अमरु ने मजदूरों को एग्रीमेंट की कानूनी स्थिति को समझाया तब मजदूरों में क्रांति की भावना जागी। भारतीय मजदूरों ने एकजुट होकर अंग्रेज सरकार और अन्याय के विरुद्ध आंदोलन जारी किया। इस बीच जमुना और अमरु की शादी हो जाती है और गिरमिट अनुबंध के खत्म होने पर वें अपने बेटे कृष्ण सिंह के साथ फीजी में बस जाते हैं। इधर कुली प्रथा के विरुद्ध भारत के समाचार पत्रों ने प्रबल आंदोलन छेड़ दिया और गोखले, सरोजनी नायडू और दीनबन्धु एण्डूजा के प्रयासों से सन् 1916 में गिरमिट प्रथा समाप्त हो गई। सन् 1924 में अमरु, जमुना और अपने बेदे कृष्ण सिंह सहित भारत वापस आए। लम्बे अरसे बाद, अमरु अपनी बूढ़ी माँ से मिलता है। कुछ दिन रहकर वे अपने नए देश फीजी वापस आ जाते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में कंवल जी ने गिरमिटिया मजदूरों की संवेदनाओं को वाणी दी है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र, अमर सिंह गिरमिट प्रथा के अंतर्गत फीजी आए भारतवंशियों का प्रतिनिधित्व करता है।

गिरमिट प्रथा के अंतर्गत फीजी आए इन श्रमिकों को कई समस्याओं से गुजरना पड़ा जिसकों कंवल ने सवेरा में रेखांकित किया है।

'सवेरा' में चित्रित समस्याएं

- **किसानों का शोषण**

'सेवरा' का कथानक सामाजिक समस्याओं को रेखांकित करता है कि किस प्रकार उच्च वर्ग वाले निर्धन किसानों का शोषण करते हैं। समाज में यह देखा गया है कि उच्च वर्ग वाले जैसे ज़मीनदार, लेंदार, अंग्रेज अफसर, कोलम्बर, उच्च जाति के समुदाय अपने स्वार्थ की बली पर निम्न वर्ग वालें निर्धन किसानों, कर्जदारों, मजदूरों व स्त्रियों को चढ़ाते हैं।

आगरा का नामी सेठ करोड़ीमल ने आस-पास के गाँवों के दीनों और दलितों के शोषण पर अपने वैभव का उच्च महल खड़ा किया है। निर्धारित समय से पहले ही सेठ करोड़ीमल अपना कर्ज वसूलने पहँच जाते और गिड़गिड़ाते किसानों के जमीन, घर, बैल निलाम कर वह अपना रकम वसूलते हैं। अमरू के परिवार की जमीन भी सेठ करोड़ीमल के यहाँ गिरवी थी। जब अमरु के पिता कर्ज के बोझ से मर गए तब अमरु के सिर पर माँ और बहनों की जिम्मेदारी आ गई, जिस कारण उसे पढ़ाई छोड़ सेठ की नौकरी करनी पड़ी। वह सुबह से लेकर शाम पाँच बजे तक सेठ के यहाँ नौकरी करता था। गर्मी के समय पंखे की रस्सी खींचता, घर के छोटे-मोटे काम करना जैसे नलके से पानी भरना, बरानदा साफ करना, चिलम भरना आदि जिसके लिए उसे महीने के सिर्फ दस रुपय वेतन मिलता था और उनके जमीन की सारी फसल सेठ के यहाँ चली जाती थी। इस पर भी एक दिन सेठ अमरू के जमीन के साथ-साथ उसके घर के भी रहननामा का झूठा कागज़ लेकर पहुँचता है। वह जमीन के साथ-साथ घर की भी निलामी का दावा करता है। लेकिन इस अन्याय के खिलाफ अमरु का युवा मन विद्रोह कर उठता है। वह सेठ के आगे गरीब लोगों को गिड़गिड़ाते और फटकारें खाते नहीं देख पाया। उससे अपने जैसे अन्य गरीब भाईयों का दर्द सहन नहीं हुआ और अंततः उसकी आत्मा सेठ के अत्याचारों को ललकारती है। वह कह उठता है -:"इतने साल तेरा पंखा खींचा। तेरी चिलमें भरी। तेरे परिवार के लिए पानी भरते मेरे हाथ पत्थर की तरह कड़े हो गए लेकिन तुझे दया न आई। तू इन्सानियत से गिर गया कि कागजों के बारे में इतना झूठ-झूठ बकवास करता है और फिर घर नीलाम करने की धमकी देता है (सेवरा ,पृ.26) ।" 'सवेरा' में सेठ करोड़ीमल निर्धन कृषकों पर लगान के लिए अत्याचार करते हैं और कर्ज वसूलने के बहाने वह उनके सूखे-भूखे शरीर से खून की आखिरी बूँद निचोड़कर भी उन्हें यह जताते कि उसने कठिन समय में उनकी सहायता की है। यहाँ लेखक ने भारतीय किसान की ऋण की समस्या को भी उठाया है, जहाँ ऋण के बहाने महाजन उनका पूर्णरूप से शोषण करते हैं।

फीजी जाकर भी इन भारतीय श्रमिकों का दुख कम न हुआ। सी.एस.आर कंपनी का अंग्रेज अफसर पीटर और उनके साथी अफसर मजदूरों का शोषण करते थे। काम के वक्त अगर कोई औरत या मर्द काम में थोड़ी भी सुस्ती दिखाता या निश्चित समय पर दिए गए कार्य को खत्म न करता तो वे चाबुक मारने में जरा भी देर नहीं करते थे। अगर कोई मजदूर किसी कारणवश खेत में देर से पहुँचता तो उसे निखटू, हरामखोर, साला आदि अपशब्द कहे जाते। लेकिन भारत से हजारों मील दूर होने के कारण तथा कानूनी अनुबंध में बंधने के कारण उनके पास इन कष्टों को सहने के अलावा कोई चारा भी न था।

इसके अलावा जातीय भेद-भाव के कारण भी निम्न वर्ग के मजदूरों को कई यातनाएं सहन करनी पड़ती हैं। पं.परमात्मा प्रकाश और पं.सत्यनारायण खुद को अन्य मजदूरों से उच्च वर्ग का समझते हैं। अगर कभी कर्मचंद जैसे निम्न जाति के मजदूर खेतों में काम करते समय या फिर दफ्तर में वेतन लेते समय उन्हें छू लेते तो पं.परमात्मा प्रकाश और पं. सत्यनारायण उन्हें कटु वचन सुनते। वे कर्मचंद जैसे निम्न जाति के लोगों को अछूत और अपवित्र मानते हैं, किंतु कुली लॉइन में इन्हें एक साथ काम करना, रहना व खाना-पीना पड़ता था जिस कारण कर्मचंद और उसके परिवार को कई बार इनकी गाली-गलोज़ से गुजरना पड़ता। वस्तुतः इन निर्धन किसानों को स्वदेश के साथ-साथ प्रवास में भी शोषण सहना पड़ा।

- **श्रमिकों की भर्ती में धोखा**

आरकाटी याने औपनिवेशिक उत्प्रवास एजेंटों द्वारा नियुक्त किए गए वे स्थानीय पुरुष, लड़के व महिलाएं थीं जो अवैध रूप से श्रमिकों की भर्ती करने में लगे हुए थे। आराकाटियों को भारतीय मजदूरों को अन्य देश में काम के लिए भेजने का कमीशन मिलता था। लखीमपुर का बिहारी भी एक आरकाटी था जो लोगों को बहका कर उन्हें बाहरी टापू भेजता था। बिहारी की मदद से ही अमर सिंह आगरा से फीजी पहुँचा। एक ओर जहाँ हालात के मारे अमर सिंह जैसे लोग अपने मर्जी से फीजी आए, वहीं दूसरी और कई ऐसे भी श्रमिक थे जो आरकाटियों द्वारा बहकाए गए थे। ज्यादातर आरकाटी हालात के मारे भोले-भाले ग्रामीणों को निशाना बनाते और उन्हें प्रवास में मजदूरी करने का सुनहरा सपना दिखाते- “ऐसा काम मिलेगा जो आपके दिल को खुश कर देगा, आपको कभी भी किसी भी प्रकार के दुखों को नहीं झेलना पड़ेगा, कभी भी किसी भी प्रकार की समस्या नहीं होगी। (सवेरा, पृ. सं. 37) ” इस प्रकार आराकाटी भोले-भाले ग्रामीणों को बहका कर डिपों के अंदर ले जाते थे, जहाँ से उन्हें अनुबंध पर अंगूठा लगाकर औपनिवेशिक देशों में भेजा जाता था। अच्छे वेतन और सुखी जीवन की चाह में भोले-भाले भारतीय आरकाटियों की बातों में आ जाते और अपने देश तथा परिवार छोड़ने के लिए तैयार हो जाते थे। मजदूरों को यह भी मालूम नहीं था कि फीजी कहाँ है। उन्हें आरकाटी द्वारा बताया गया था कि फीजी कलकत्ता के पास ही है। जबकि मजदूर पानी के जहाज में तीन महीने का लम्बा सफर तय करके फीजी पहुँचे। इस लम्बे समुद्री सफर के कारण कुछ मजदूर बीमारी के कारण मर भी गए। घनशयाम की मृत्यु समुद्री बीमारी के कारण जहाज में ही हो गई थी। जब जहाज फीजी के सूवा घाट पर लगा तब वहाँ न इन श्रमिकों को कोई घर दिखाई दिया न खेत। फीजी पहुँचकर अमरू सभा को संबोधित करते हुए श्रमिकों की भर्ती के संबंध में कहता है- “जिन लोगों ने यह कुली प्रथा चलाई है, उन्होंने इस फीजी देश को स्वर्ग कहकर बहुत से लोगों को धोखा दिया है। हाँ, उनके लिए यह स्वर्ग होगा मगर हमारे लिए आज यह एक नर्क से कम नहीं।”[iv] इस प्रकार गिरमिट प्रथा की नींव धोखे पर रखी गई थीं और आरकाटी के बहकावे में आकर कई भारतीय अपने देश से विस्थापित हुए।

- **विस्थापन की पीड़ा**

विस्थापन एक वैश्विक समस्या है जिसका अर्थ होता है अपना घर और स्थान छोड़कर दूसरी जगह जाकर बसना। यह स्थिति बहुत पीड़ादायक होती है जिससे कोई भी व्यक्ति अपने जीवन काल में नहीं गुजारना चाहेगा। आर्थिक विकास सभी देशों के लिए अत्यंत आवश्यक है लेकिन विकास परियोजनाओं के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव भी उभर कर सामने आते हैं। विकास के कारण विस्थापन अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय समस्या के रूप में उभरा है। वैश्विक स्तर पर जहाँ औपनिवेशिक प्रभाव के कारण भारतवंशियों को विस्थापन की पीड़ा सहनी पड़ी है। सन् 1879-1916 के बाच गिरमिट प्रथा के अंतर्गत फीजी गए प्रवासी भारतीयों को अपना घर, परिवार, जमीन, जगह, देश छोड़कर सात समुद्र पार दक्षिण महासागर के एक अनजान देश, फीजी में आकर विस्थापन का दर्द झेलना पड़ा। इस विस्थापन की पीड़ा को कंवल जी ने 'सवेरा' उपन्यास में अमर सिंह के माध्यम से दर्शाया हैं।

अमर सिंह, करमचंद, जमुना, रहीम आदि श्रमिकों को कुली लॉइनों की तंग कोठरियों में अन्य जाति के स्त्री, पुरूषों व बच्चों के साथ संयुक्त रूप में रहना कठिन था। इन कुली लॉइनों में सिर्फ सिर छुपाने के लिए छत थी या फिर जरूरत के मुताबिक खाना मिलता था। जहाँ वे अपने घर के माहौल में स्वतंत्र थे, वहीं अब कैदी बन कर जीना पड़ रहा है। खाना खाने और सिर छुपाने के अलावा उनके पास कोई आराम की सुविधा नहीं है। सी.एस.आर कंपनी की गंदी अंधेरी कोठरियाँ, आस-पास दौड़ते मोटे-मोटे चूहे, भिनभिनाते कटीले मच्छर, आपसी झगड़े, सरदारों और कोलम्बरों का कुरूर बर्ताव यह सब कुछ विस्थापन के कारण अमरू तथा अन्य भारतीय श्रमिकों को सहना पड़ा। फीजी की प्राकृतिक खूबसूरती जैसे पहाड़े, इंद्रधनुष के रंग, हरे-हरे पेड़-पौधे, समुद्र की लहरे उनके आस-पास फैली दरिद्रता के अंधेरे में छिप जाती थीं। लेकिन समय के साथ-साथ इन मजदूरों ने इस नए वातावरण में खुद को ढाल लिया था। गिरमिट प्रथा की समाप्ति के बाद अमरू और जमुना सदा के लिए फीजी में ही बस गए और उनका बेटा कृष्न फीजी को ही अपना देश कहता है।

'सवेरा' में भारतवंशियों का भारत से फीजी में विस्थापन का सच्चा चित्रण प्रस्तुत है। यहाँ लेखक ने विस्थापन के दौरान अपने पूर्वजों के कष्टों को रेखांकित किया है।

- **गिरमिटिया मजदूरों का कष्ट**

गिरमिट प्रथा के अन्तर्गत जो कष्ट और यन्त्रणाएँ मजदूरों को झेलनी पड़ी वे सर्वविदित हैं। गिरमिटिया मजदूरों को फीजी पहुंचने पर अनेक कष्टों को सहना पड़ा। कठिन परिस्थितियों को कंवल जी ने 'सेवरा' उपन्यास में अंकित किया है। भारत से ये मजदूर अपना भाग्य बदलने आए थे मगर यहाँ आकर

इनके कष्ट कम होने के बजाए और भी बढ़ गए। उनके सपने टूट गए जब उन्हें रहने के लिए चार गज लम्बी, ढाई-तीन गज चौड़ी अँधेरी कोठरियां दी गईं। इन प्रवासी मजदूरों को ऐसी कोठरी मिली जो बहुत छोटी, तंग और मैली थी। उन्हें इतनी छोटी जगह में उठना, बैठना, खाना और सोने था। भारतीय मजदूरों को गन्ने और अन्य खेतों में पाँच साल के लिए काम करने के लिए ले जाया गया था। एक ओर तो अपनी धरती पर दुख झेल कर आए थे और फीजी में इन मजदूरों को नरक की जिंदगी मिली।

गिरमिटिया मजदूरों और अंग्रेजों के रहने और जीने के तौर तरीकों में जमीन-आसमान का अन्तर था। अंग्रेज ओवरसियर अफसर, कोलम्बर और गोरी महिलाएँ किसी जहाज के आने पर या श्याम को इकटठा होकर दारु और कहकहों से अपना मनोरंजन करते लेकिन, कुली लॉइनों में गंदगी और दरिद्रता ताण्डव नृत्य करती। शाम को थक हार कर जब वे आराम करने अपनी कोठरी में आते तब मोटे-मोटे चूहे, बदबू, भिनभिनाते कंटीले मच्छर इन्हें चैन से सोने भी नहीं देते थे। लाइनों में गरीब और बेबस मजदूर यही सोचते कि किस तरह इस नरक से छुटकारा मिले। गिरमिटिया मजदूर रहीम अपने मजदूर भाईयों के साथ हो रहे अन्याय के विरूध आवाज उठाता है- “एक तरफ ओवरसियरों और मिल-मालिकों की कोठरियों में अमीरी चमकती और दूसरी ओर मजदूरों की बू मारती लाइनों में दिल हिला देने वाली गरीबी। उधर कोठरियों में महफिलें जमती है। इधर लाइनों में बीमारी और भूख के कारण इतनी ताकत भी नहीं कि हम छटमटा सकें (सवेरा, पृ.109)।” लेकिन वहाँ न कोई उनकी शिकायत सुनता था और चारों ओर समुद्र से घिरे होने के कारण न ही वे कहीं भाग सकते थे।

इसके अतिरिक्त उन्हें प्रातः से सायांकाल तक हड्डी-तोड़ परिश्रम करना पड़ता और कभी-कभी कार्य निश्चित घंटों से भी अधिक समय तक कराया जाता। बारिश हो या सूखा, गर्मी हो या सर्दी, धूप हो या छाँव हर गिरमिटिय को अपना ‘टास्क’[3] पूरा ही करना पड़ता था वरना कोलम्बरों और सरदारों की गालियाँ और कोड़े बरसते थे। तथा छोटे-छोटे अभियोग पर लोगों को जेल भी भेज दिया जाता और फिर जुर्माना करके उससे वे शिलिंग भी छीन लिए जाते जिनके खातिर वे अपना देश छोड़ आए थे। अगर किसी को बुखार भी हो तो उसे काम करना पड़ता था, नहीं तो कोलम्बर कोड़े मार कर उसकी खाल छील देता। एक दिन कर्मचन्द बीमार पड़ गया और कमजोरी के कारण खेतों में आराम करने लगा। बीमार होने पर

[3] टास्क- श्रमिकों को कोलम्बर द्वारा दिया गया निर्धारित कार्य (Task).

उसे दवा, दारु और सहानुभूति के स्थान पर कोलम्बर पीटर के कोड़े खाने को मिले। पीटर ने कर्मचन्द को हंटर से मारकर कहा - "जाओ, वहाँ काम करो। बीमारी ठीक हो जाएगी। नहीं ठीक हुई तो बता देना यह दवाई (हंटर की मार) बिलकुल ठीक कर देगी।" मजदूरों से ज्यादा काम निकलवाने के लिए पीटर जैसे अन्य ओवरसियर अफसर मजदूरों की जान लेने में संकोच नहीं करते क्योंकि उनके लिए इन कुलियों के जीवन का मूल्य कुछ न था। इस तरह मजदूरों को डरा धमका कर या मार-पीट कर उनके अधिकारों को दबा दिया जाता था।

खेतों में इन मजदूरों को इन्सान ही नहीं समझा जाता था। कोलम्बर मजदूरों को नाम के बजाय नम्बर से पुकारते थे जैसे रहीम के लिए नम्बर दस तो अमरसिंह के लिए नम्बर पन्द्रह आदि। यह नाम इन मजदूरों के पहचान का आधार था जिन्हें सी.एस. आर कंपनी के अफसरों ने मिटाने का प्रयास किया। कोलम्बर के लिए ये मजदूर मशीन के पुर्जों की तरह थे जिनकी भावनाओं को वे जब चाहे तब कुचल देते थे। इन कष्ठों, जिल्लत, ठोकरों और बेइज्जती के बाद उन्हें एक शिलिंग मिलता था जो बहुत कम वेतन था। जिस तरह मेहंदी दुल्हिन के हाथों पर लगने से पहले चोंटें खाती है, मसली जाती है, पत्थर पर रख कर पीसी जाती हैं तब कहीं रंग देने योग्य होती है, इसी तरह ये मजदूर पिसते रहे, ठोकर खाते रहे। लेकिन उनके दुख-दर्द दूर करने वाला, सहानुभूति देने वाला कोई नहीं थी।

लेखक ने अपने उपन्यास में कोलम्बर तथा ओवरसियरों के अत्याचारों का दर्दनाक चित्रण किया है। भारतवंशी मजदूरों ने फीजी के उजाड़ और वीरान टापू को स्वर्ग में बदलने के लिए स्वयं कई कष्टों को भोगा।

- **स्त्री संवेदनाएं**

गिरमिट काल के दौरान भारतीय नारियों की दशा पुरुषों से भी अधिक शोचनीय और दयनीय रही है। 'सवेरा' में स्त्री शोषण प्रमुखता दो रूप में देखा जा सकता है- एक स्वयं भारतीय समाज द्वारा और दूसरा अधिकारी अफसरों द्वारा। भारतीय नारी को खेतों में काम करने के अतिरिक्त घर की भी जिम्मेदारी निभानी पड़ती थी। धूप हो या पानी, स्वंय बीमार हो या उसका बच्चा बीमार हो, सभी स्थितियों में उसे खेत में काम के लिए जाना पड़ता था। शाम को जब काम कर लौटती तो परिवार के लिए भोजन बनाती, चौके की साफ-सफाई करती, बर्तन मांजती और बच्चों की देखभाल करती। मुँह अन्धेरे सवेरे उठकर वह फिर से परिवार के लिए दिन का भोजन बनाती, जिससे अन्य परूष वर्ग अपने साथ खेत में ले

जाते। इस प्रकार वह पुरूषों से ज्यादा काम करती थी। गिरमिटकाल में श्रमिकों को लिए चिकित्सा की कमी होने पर स्त्रियाँ बिना किसी सहारे या दवा के बच्चों को जन्म देती। कभी-कभी समय पर इलाज न होने पर ये स्त्रियाँ या तो पीड़ा से छटपटा कर मर जाती या प्रायः बच्चे जीवित नहीं रहते थे। लेकिन वे इन कष्टों से भाग नहीं सकते थे। इन कष्टों के कारण कुंती और नारायणी जैसी स्त्रियों ने निराश होकर आत्महत्या करने की ठानी।

अमरू शांति को पत्र लिखकर फीजी में भारतीय स्त्रियों की स्थिति से अवगत कराता है ताकि वह फीजी आने का विचार अपने मन से निकाल दे। “पहले तो कलकत्ता डिपो में ही तेरा सत्य और कुँवारापन भंग हो जाएगा। अगर तू वहाँ से सुरक्षित निकल आई तो जहाज में कई भूखे आदमी तुझ पर झपट पड़ेंगे। अगर तुम अक्सर झगड़े औरतों के कारण होते क्योंकि उनकी संख्या पर्याप्त नहीं थी। अगर तुम मेरी बन कर भी रहना चाहोगी तो ये औरत के भूखे राक्षस कोई-न-कोई खेल जरूर दिखलाएंगे।...यहाँ हर स्त्री को भोगने के लिए तीन-तीन रावण तैयार खड़े हैं।” स्त्रियों के शोषण का एक कारण था कि मजदूरों में पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या बहुत कम थी। फीजी में हर सौ पुरुषों के बीच सिर्फ तेंतीस स्त्रियाँ थी।

इसके अलावा समाज के भूखे भेड़िये सर्वत्र ही असहाय नारी की ओर गिद्ध दृष्टि लगाए रहते हैं। इन स्त्रियों के लिए गरीबी उनका सबसे बड़ा अभिशाप है। स्वार्थी समाज में नारी के अस्तित्व का कोई मूल्य नहीं है। वे सदा ही पुरुष की लोलुप दृष्टि का शिकार बनती चली आ रही है। जमुना एक ऐसी स्त्री है जो अपने परिवार के लोगों की कुदृष्टि और कुकर्म की शिकार है। वह गरीब और बेबस होने के बावजूद भी जवान और सुन्दर थी। पति की मृत्यु के बाद उसके जेठ की बुरी नजर उसपर पड़ गई। जमुना अपनी इज्जत बचाकर ससुराल से भागी तो आरकाटी ने उसे बहका कर फीजी भेज दिया। फीजी आकर भी जमुना पर कामी पुरूषों की निगाहे बनी रही। अमरू और रहीम से जमुना अपनी व्यथा कहती है- “... कभी कोई बदरीनाथ चाँदी के चमकते सिक्के हाथ में लेकर दिखाता और कभी कोई माधो आँखे मारता। कभी मानसिंह अपनी औरत बनाकर रखता तो कभी नसेड़ी बेचू धमकियाँ देकर साथ रहने के लिए मजबूर करता (पृष्ठ 67)।” लेकिन शोषित नारी को कोई अपनाता नहीं, वह मात्र भोग की ही वस्तु समझी जाती है। आगे जमुना कहती है-" तीन साल बीत चले हैं। सुख की नींद नहीं आई। मैं पेड़ की उस टहनी की तरह इतनी निर्बल हो गई हूँ जो हवा के रुख के साथ उधर को ही झुक जाती हो जिधर को झोंके ले जाएँ।" इस प्रकार अन्य समस्याओं के साथ ही नारी के सामने अपने अस्तित्व तथा सतीत्व का संकट बराबर लगा रहा।

सरदार मानसिंह मजदूर स्त्रियों को अपनी भोग की वस्तु समझता है। वह लक्ष्मी, जमुना, तथा माधो की पत्नी को अन्य पुरुषों के साथ सोने के लिए मजबूर करता है। तथा अंग्रेज अफसरों द्वारा भी स्त्रियों का शोषण किया जाता है। एक दिन खेतों में काम करते वक्त पीटर ने जमुना को अन्य स्त्रियों से दूर काम करने के लिए भेज दिया ताकि वह मौका देख कर उसे अपनी हवस का शिकार बना सके। काम के बहाने से पीटर जमुना को खींचकर खेतों को अंदर ले गया और अपनी यौन भूख मिटाने के लिए उस पर अपनी पूरी शक्ति अज़माने लगा। लेकिन ठीक समय पर जमुना वहाँ से भागने में सक्षम हुई। इस प्रकार दूर खेतों और जंगलों में काम के बहाने भेजकर सरदार और कोलम्बर स्त्रियों का बलात्कार करते थे। गिरमिटिया नारी का अत्यंत करूण चित्रण 'सवेरा' में प्रस्तुत किया है।

'सवेरा' में कंवल जी ने इतिहास का यह लोमहर्षक कालखंड बड़ी ही संवेदना के साथ दर्ज किया है। यह उपन्यास भारतवंशियों तथा उनके पूर्वजों के संघर्ष तथा त्रासदी एवं शोषण को संपूर्ण परिवेश के साथ उद्घाटित करता है। 'सवेरा' में लेखक ने पाठकों के समक्ष प्रवासी भारतीयों के गिरमिट काल से जुड़े अनुभव, संघर्ष, आंदोलन तथा उपलब्धियों को केंद्र में रखा है। इस उपन्यास में लेखक ने इतिहास का भव्य चित्र उपस्थित किया है तथा भारतवंशियों की संवेदनाओं और बलिदान को भावात्मक रूप से अंकित किया है। यह उपन्यास फीजी देश के विकास और उन्नति में गिरमिटिया मजदूरों के योगदान व बलिदान को रेखांकित करता है। वस्तुतः सवेरा प्रवासी भारतीयों के गिरमिट जीवन का दस्तावेज़ है जिसका ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय महत्व भी है। गिरमिट के इतिहास को केंद्र में रखकर, यह उपन्यास गिरमिटिया पूर्वजों के प्रति कौतूहल, अतीत के प्रति श्रद्धा तथा आदर का भाव दर्शाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] आरकाटी- मजदूरों को भरती करने वाला अंग्रेज सरकार का एजेंट

[2] टास्क- श्रमिकों को कोलम्बर द्वारा दिया गया निर्धारित कार्य (Task)

[3] जोगिन्द्र सिंह कंवल. 1976. सवेरा सिंह पब्लिशज़, फीजी. भूमिका

[4] के. एल. गिलियन.1958. A History of Indian Immigration and Settlement in Fiji. Australian National University.

[5] जोगिन्द्र सिंह कंवल. 1976. सवेरा सिंह पब्लिशज़, फीजी. भूमिका

[6] विमलेश कांति वर्मा (सं). 2012. फ़ीजी का सृजनात्मक हिंदी साहित्य. साहित्य अकादेमी. पृष्ठ 46

[7] वही, पृ. 105

[8] वही, पृ. 85